यूरोडायनेमिक जाँच

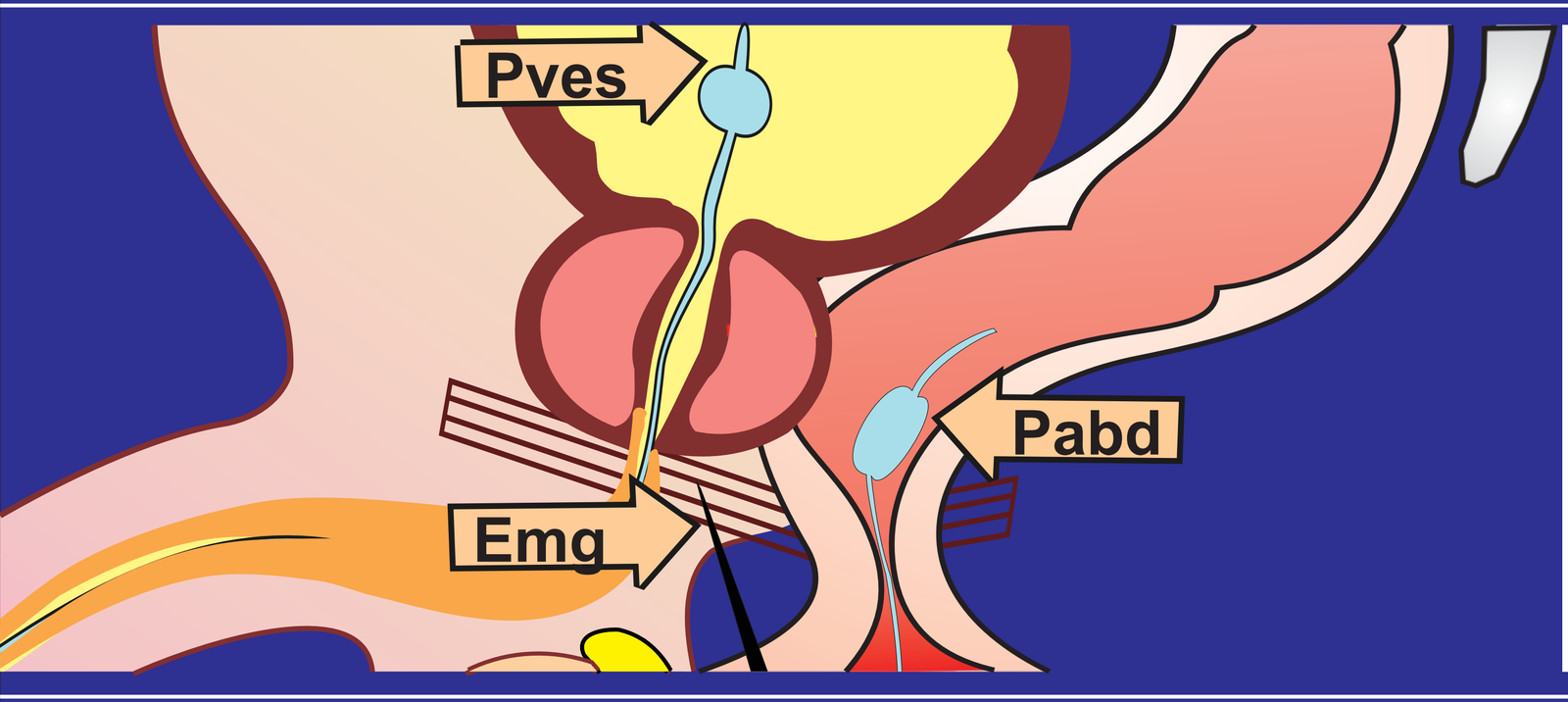

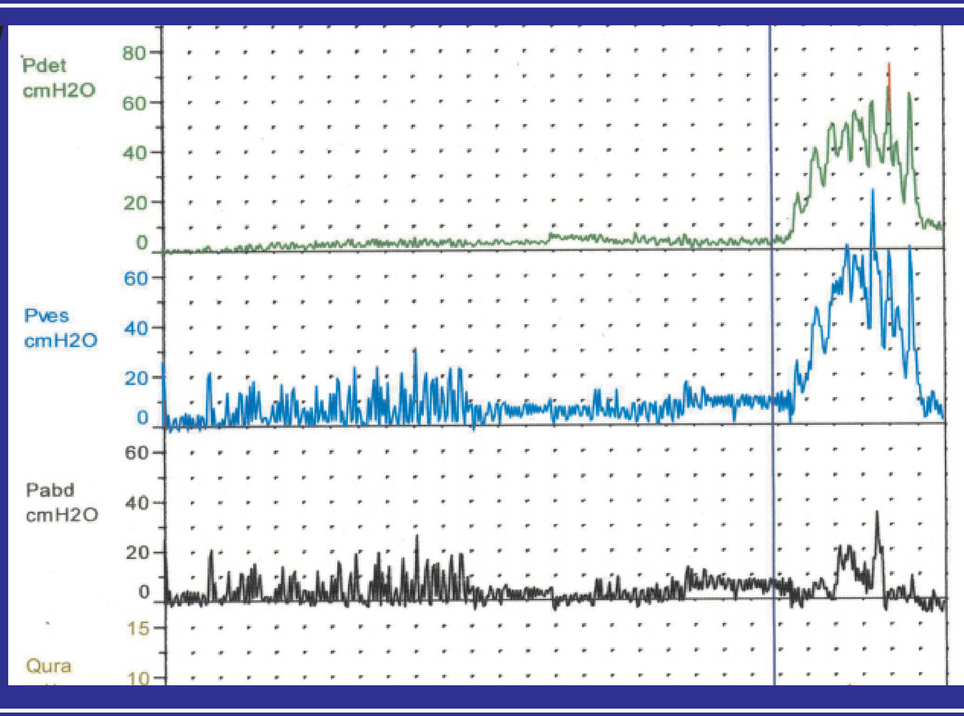

इस जाँच की कब आवश्यकता होती है?

यह जाँच मूत्राशय की कार्य क्षमता जानने के लिये करी जाती है। मूत्राशय सर्वप्रथम मूत्र को एकत्रित करने का कार्य करता है एवं जब वह पूर्ण रूप से भर जाता है तो उचित समय तथा स्थान मिलने पर मूत्र नलिका (यूरिथ्रा) के रास्ते से एक धार के रूप में, मूत्र त्याग कर देता है। मूत्राशय के इन दोनों कार्यों की कुशलता को परखने के लिए एक विशेष कम्प्यूटर की सहायता से कुछ आंकड़े एकत्रित किये जाते हैं जिनको एक ग्राफ के रूप में दर्शाया जाता है। यह जाँच अधिकांशतः निम्न रोगों में करवायी जाती है।

- ❑ यदि मूत्राशय की मांसपेशियां शिथिल हो गयी हों।
- ❑ यदि रोगी को अपने मूत्र पर कन्ट्रोल नहीं हो।
- ❑ यदि रोगी को किसी न्यूरालॉजी रोग के चलते मूत्र त्याग में रूकावट का आभास होता हो।

यह जाँच कैसे करी जाती है?

- यह जाँच एकांत में करी जाती है एवं इसमें एक से डेढ़ घण्टे तक का समय लगता है।
- आपको इस जाँच को कराने की लिखित सहमति देनी होगी।
- महिला रोगियों की जाँच एक महिला परिचायिका की उपस्थिति में करी जाती है।
- जाँच को प्रारम्भ करने से पहले आपको एक एण्टीबायोटिक औषधि का इन्जेक्शन लगाया जायेगा।
- सर्वप्रथम आपसे यूरोडायनामिक मशीन के कमोड में मूत्र त्याग करने के लिये कहा जायेगा।
- तदोपरांत आपकी मूत्र नली में 'यूरोडायनामिक कैथेटर' प्रवेश कराया जाता है तथा एक पतले धागे की मदद से इसे मूत्राशय में रोका जाता है। मल द्वार के रास्ते से भी एक पतला कैथेटर प्रवेश कराया जाता है एवं इसे एक टेप के द्वारा बाहरी त्वचा पर चिपका देते हैं। मूत्राशय का कैथेटर मूत्राशय के भीतर उत्पन्न दबावों की जानकारी प्राप्त करता है तथा मल द्वार में लगाया कैथेटर

पेट की मांसपेशियों द्वारा उत्पन्न प्रेशर की जानकारी लेता है। कुछ रोगियों में मूत्र नलिका के चारो तरफ पाये जाने वाले 'स्फिन्कटर' की मांसपेशियों की गतिशीलता जानने के लिये, मलद्वार के पास की मांसपेशियों में एक बारीक सी सुई भी प्रवेश करायी जाती है (इलेक्ट्रोमायोग्राफी सुई)। इन सब नलियों को लगाने में मात्र पाँच से सात मिनट लगता है एवं इनके लगाने में रोगी को कोई विशेष पीड़ा नहीं होती है। अतः आप बिना किसी डर के इसमें भरपूर सहयोग करे।

- इस सभी नलियों को एक अन्य विशिष्ट नलिकाओं एवं ट्रांसडयूसर की सहायता से यूरोडायनामिक मशीन से सम्बन्धित कर देते हैं जिससे मूत्राशय तथा आंतों द्वारा उत्पन्न प्रेशर की रिकार्डिंग मशीन द्वारा की जा सके।
- इन सभी नलिकाओं को लगा कर रोगी को मशीन के कमोड कर बिठा देते हैं। रोगी को एक दो बार खांसी करा कर टैक्नीशयन इन नलिकाओं की कार्य क्षमता को परखता है।
- मूत्रनली में लगाये गये कैथेटर द्वारा मूत्राशय में कीटाणुरहित सैलाइन भरते हैं। जैसे-जैसे मूत्राशय थोड़ा भरता जाता है, तो रोगी को मूत्र त्याग करने की प्रथम इच्छा होती है। थोड़ा और सैलाइन भरने पर रोगी की मूत्र त्याग की इच्छा अत्याधिक तीव्र हो जाती है और इस प्रकार हम जान पाते हैं कि रोगी के मूत्राशय में कितनी मात्रा में द्रव एकत्रित करने की क्षमता है। यदि रोगी को अपने मूत्र पर कन्ट्रोल नहीं है तो इस दौरान उसके मूत्राशय में भरा स्लाइन बाहर टपक पड़ता है और कम्प्यूटर इसका रिकार्ड बना लेता है।
- जब रोगी का मूत्राशय सम्पूर्ण रूप से भर जाता है तो टैक्नीशीयन रोगी को बैठे-बैठे ही कमोड में मूत्र त्याग करने का संकेत देता है। जैसे ही रोगी मूत्र त्याग करना प्रारम्भ करता है, मूत्राशय में लगा यूरोडायनामिक कैथेटर मूत्राशय के प्रेशर को रिकार्ड कर लेता है।
- इस प्रकार एकत्रित किये गये सभी आंकड़े कम्प्यूटर के स्क्रीन पर एक ग्राफ के रूप में दिखते रहते हैं जिनका बाद में एक प्रिंट भी लिया जाता है।
- कुछ रोगी इस जाँच के दौरान थोड़ा विचलित होने लगते हैं। यदि आप बिना किसी डर के अपना सम्पूर्ण सहयोग देंगे तो आपकी जाँच बेहतर एवं योगदायक होगी। उस सम्पूर्ण जाँच में कोई दर्द नहीं होता है, हाँ थोड़ी असुविधा जरूर होती है।

जाँच के पहले क्या सावधनियाँ बरते?

जब आप यूरोडायनामिक परीक्षण कराने आयें तो निम्न बातों का ध्यान रखें :

- एक या दो गिलास पानी पी कर आयें ताकि आपको मूत्रत्याग करने की इच्छा हों एवं आपका यूरोफ्लो टेस्ट हो सकें।
- अपनी पूर्व में करी गयी सम्पूर्ण जाँचें जैसे अल्ट्रासाउण्ड, एक्स-रे, मूत्र की कल्चर रिपोर्ट आदि अवश्य साथ लायें।
- अपने सभी नुस्खें भी लायें जिससे आपको दी जा रही दवाईयों के बारे में विस्तृत जानकारी ली जा सके।
- जाँच वाले दिन आपको मल त्याग ठीक से होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ हो तो कृपया पहले ही चिकित्सक को बतायें - यदि जाँच करना अत्यन्त आवश्यक होगा तो वह आपको पहले एनीमा लगाकर मल त्याग करवायेंगे अन्यथा आपको कुछ दस्तावर दवाईयाँ बताकर अगले दिन बुलायेंगे।
- कृपया अपने जननांगों के आस-पास के बालों को अधिक से अधिक छोटा करें।
- कृपया अपने जननांगों को भलीभांति साबुन पानी से धोयें तथा एक साफ तौलिया से सुखायें।

जाँच के पश्चात् क्या परेशानियां हो सकती हैं?

- मूत्र के साथ अल्प मात्रा में रक्त आ सकता है जो थोड़ा अधिक जल ग्रहण करने से सामान्यतः स्वतः ठीक हो जाता है।
- मूत्र त्याग में कुछ जलन होना। आपको बतायी दवाओं के प्रयोग से यह एक-दो दिन में ठीक हो जाता है।

अपने चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क करें।

- यदि आपको जाड़ा लगकर बुखार या कमर के किसी तरफ दर्द हो।
- यदि आपको मूत्र में रक्त के थक्के आने लगे।
- यदि आपको मूत्र त्याग में अधिक रूकावट प्रतीत होने लगे।